हफ़्तावार रिसाला : 184
Weekly Booklet : 184

Karamate Khwaja (Hindi)

करामाते ख़्वाजा

तआ़रुफ़ ग़रीब नवाज़ 03
कलामुल्लाह से महब्बत 05
करामते ख़्वाजा ब ज़बाने इमाम अहमद रज़ा 09
अमीरे अहले सुन्नत दरे ख़्वाजा पर 13
नमाज़ इ़ज़्ज़त का सबब है 17

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ **:** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है **:**

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُستَطرَف ج ١ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**करामाते ख़्वाजा**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

करामाते ख़्वाजा

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 18 सफ़ह़ात का रिसाला **''करामाते ख़्वाजा''** पढ़ या सुन ले उसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه) की ख़्वाब में ज़ियारत नसीब फ़रमा और उसे अपने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पीछे जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बिला ह़िसाब पड़ोस इ़नायत फ़रमा ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا है : जो नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ेगा उस पर **अल्लाह** पाक और उस के फ़िरिश्ते 70 मरतबा रह़मत भेजेंगे । (مسند امام احمد، ۲/۲۱۴، حدیث: ۶۷۶۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

कहते हैं एक बादशाह बड़ा ज़ालिम और बद मिज़ाज था । उस का शह्र के अत़राफ़ में एक निहायत ख़ूब सूरत बाग़ था । जिस में साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ पानी का एक ह़ौज़ था, एक **अल्लाह** वाले का वहां से गुज़र हुवा तो वोह उस बाग़ में तशरीफ़ ले गए और ह़ौज़ के पानी से ग़ुस्ल फ़रमा कर नमाज़ अदा कर के वहीं बैठ कर तिलावते क़ुरआन में मसरूफ़ हो गए कि इतने में बादशाह के आने का शोर बुलन्द हुवा, मगर वोह **अल्लाह** पाक

का नेक बन्दा इत्मीनान के साथ यादे ख़ुदा में मसरूफ़ रहा । जब वोह ज़ालिम हाकिम अपनी शाही शानो शौकत के साथ बाग़ में दाख़िल हुवा तो हौज़ के किनारे सादे से लिबास में एक नेक सिफ़त शख़्स को देख कर आग बगूला हो गया, वोह अपने सिपाहियों पर ग़ज़ब नाक हो कर बोला कि इस शख़्स को किस ने मेरे बाग़ में बैठने की इजाज़त दी ? सिपाही सहमे हुए थे कि अचानक उस नेक हस्ती की नज़रे फ़ैज़ असर उस बादशाह पर पड़ी, वोह बादशाह एक दम कांपने लगा और लरज़ते हुए ज़मीन पर गिरा और बेहोश हो गया । **अल्लाह** पाक के उस नेक बन्दे ने पानी मंगवा कर उस के मुंह पर पानी के छींटे मारे तो थोड़ी ही देर में उसे होश आ गया, होश में आते ही वोह निहायत आजिज़ी व इन्किसारी के साथ अपनी कोताही की मुआफ़ी मांगने लगा और फिर अपने तमाम ख़ादिमों समेत उस **अल्लाह** पाक के नेक बन्दे के हाथों पर तौबा कर के उन की ग़ुलामी में दाख़िल हो गया । (हिन्द के राजा, स. 74)

ऐ आशिक़ाने औलिया ! क्या आप जानते हैं येह नेक बख़्त, बा रो'ब, तिलावते क़ुरआन करने वाली नेक सिफ़त हस्ती कौन थी ? येह सिल्सिलए आलिया चिश्तिय्या के अज़ीम पेशवा ख़्वाजए ख़्वाजगां, सुल्तानुल हिन्द हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हसन सन्जरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه थे जो आगे चल कर हिन्दूस्तान के बेताज बादशाह बने । जब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मदीनतुल हिन्द अजमेर शरीफ़ तशरीफ़ लाए तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की कोशिशों से लोग जूक़ दर जूक़ (या'नी लगातार) इस्लाम क़बूल करने लगे चुनान्चे देहली से अजमेर शरीफ़ तक के सफ़र में तक़रीबन नव्वे (90) लाख अफ़राद मुसल्मान हुए। (معین الارواح، ص۱۸۸ بتغیر)

ख़्वाजए हिन्द वोह दरबार है आ'ला तेरा कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

तआ़रुफ़े ग़रीब नवाज़

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ! हमारे आक़ा, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का मुबारक नाम ''ह़सन'' है, जब कि अल्क़ाबात ''मुईनुद्दीन'', ''अ़त़ाए रसूल'', ''सुल्त़ानुल हिन्द'' हैं। ख़्वाजा फ़ारसी ज़बान का लफ़्ज़ है और इस का मत़लब है ''सरदार'', ''आक़ा''। (फ़ीरोज़ुल्लुग़ात, स. 633) आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत 14 रजबुल मुरज्जब 537 हि. ब मुत़ाबिक़ 1142 ई. में सिजिस्तान या सीस्तान के अ़लाक़े ''सन्जर'' में हुई और इन्तिक़ाल शरीफ़ (Death) भी रजबुल मुरज्जब के महीने की 6 तारीख़ 633 हि. को हुवा।

औलादे मुबारक

ऐ आ़शिक़ाने ग़रीब नवाज़ ! ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दो साह़िब ज़ादे (Son) और एक साह़िब ज़ादी (Daughter) थी। बड़े बेटे का नाम मुबारक अबुल ख़ैर ह़ज़रते ख़्वाजा फ़ख़्रुद्दीन चिश्ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه था। आप इ़ल्मे ज़ाहिरी व बात़िनी से मालामाल थे, अब्बूजान ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द 20 साल तक जा नशीन की ह़ैसिय्यत से आप ने लोगों को फ़ैज़ पहुंचाया। दूसरे बेटे अबू सालेह़ ह़ज़रते ख़्वाजा ह़िसामुद्दीन चिश्ती رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه थे। बेटी साह़िबा का नाम मुबारक बीबी ह़ाफ़िज़ा जमाल رَحْمَةُاللهِ عَلَيْها था, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपनी बेटी से ख़ास शफ़्क़तो मह़ब्बत फ़रमाते थे, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْها निहायत पाकीज़ा फ़ित़रत और इबादत गुज़ार ख़ातून थीं, अब्बूजान की ख़ास इनायत से आप की बदौलत ख़वातीन को ख़्वाजा साह़िब के फ़ैज़ान से ख़ूब ह़िस्सा

मिला। ख़्वाजा साहिब की दूसरी ज़ौजा से भी आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक साहिब ज़ादे थे। जिन का नाम ख़्वाजा अबू सईद ज़ियाउद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه था, ख़्वाजा साहिब के मज़ार शरीफ़ के अत़राफ़ में ही आप की क़ब्रे मुबारक है। (तज़्किरए ख़्वाजए अजमेर, स. 37, 38)

अपने क़दमों में बुला ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया और जल्वा भी दिखा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
हो करम बर ह़ाले मा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया अज़् पए दाता पिया ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
आह! कितनी देर से मैं दूर हूं अजमेर से जाने मैं कब आऊंगा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

चार सह़ाबए किराम का वाक़िआ़ ब ज़बाने ख़्वाजा

ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मरतबा फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मरतबा अस्ह़ाबे कह्फ़ से मुलाक़ात की आरज़ू की तो कहा गया : आप उन्हें दुन्या में ज़ाहिरन नहीं देख पाएंगे, अलबत्ता आख़िरत में देख लेंगे और अगर आप चाहते हैं कि वोह दीने इस्लाम में दाख़िल हो जाएं तो हम उन्हें दाख़िल किये देते हैं, आप अपने चार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को अपनी चादर पर बिठाएं, (हवा) आप की चादरे मुबारक (को उठा कर) अस्ह़ाबे कह्फ़ के ग़ार पर पहुंच गई, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللهُ عَنْهُمْ اَجْمَعِین ने अस्ह़ाबे कह्फ़ को सलाम किया, **अल्लाह** पाक ने उन्हें ज़िन्दा किया और अस्ह़ाबे कह्फ़ ने सलाम का जवाब अ़र्ज़ किया। फिर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अस्ह़ाबे कह्फ़ पर दीने इस्लाम पेश किया, जो उन्हों ने क़बूल किया। (दलीलुल आ़रिफ़ीन उर्दू अज़् हश्त बिहिश्त, स. 83) दीगर बा'ज़् किताबों में यूं है कि अस्ह़ाबे कह्फ़ ने अ़र्ज़

किया : ''हमारी त़रफ़ से **अल्लाह** पाक के प्यारे रसूल ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर जब तक ज़मीनो आस्मान हैं सलामती नाज़िल हो और आप सब पर भी।'' फिर अस्ह़ाबे कह्फ़ हुज़ूरे पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान लाए और दीने इस्लाम में दाख़िल हो गए और अ़र्ज़ किया कि : ''हमारा प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम पेश कीजियेगा।'' (تفسیر الثعلبی، ۱۳۹۲/۱-تفسیر روح البیان، ۲۳۱/۵)

मुस्त़फ़ा की अम्बिया की हर सह़ाबी और वली की मह़ब्बत हो अ़त़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
दुश्मनों में हूं घिरा सिद्दीक़ का सदक़ा बचा अल मदद ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

हर सह़ाबिये नबी जन्नती जन्नती
चार यारने नबी जन्नती जन्नती
सब सह़ाबियात भी जन्नती जन्नती

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

कलामुल्लाह से मह़ब्बत

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़ाफ़िज़े क़ुरआन थे, आप हर दिन और रात में एक एक बार ख़त्मे क़ुरआन फ़रमाया करते थे और हर ख़त्मे क़ुरआन के बा'द ग़ैब से आवाज़ आती कि ऐ मुईनुद्दीन ! मैं ने तेरा ख़त्मे क़ुरआन क़बूल किया। (सियरुल अक़्ताब (उर्दू), स. 136) आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो शख़्स क़ुरआने करीम को देखता है **अल्लाह** पाक के फ़ज़्लो करम से उस की बीनाई (या'नी देखने की त़ाक़त) ज़ियादा हो जाती है और उस की आंख कभी नहीं दुखती और न ख़ुश्क होती है। एक मरतबा एक बुज़ुर्ग मुसल्ले (या'नी जाए नमाज़) पर बैठे हुए थे और सामने क़ुरआने करीम था। एक नाबीना ने आ कर अ़र्ज़ की, कि मैं ने बहुत इ़लाज किये मगर आराम नहीं हुवा,

अब आप के पास आया हूं ताकि मेरी आंखें ठीक हो जाएं। मैं आप से दुआ की अ़र्ज़ करता हूं, उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने क़िब्ला रुख़ हो कर फ़ातिहा पढ़ी और क़ुरआन शरीफ़ उठा कर उस की आंखों पर मला जिस से उस की दोनों आंखें रोशन हो गईं।

(दलीलुल आ़रिफ़ीन उर्दू अज़ हश्त बिहिश्त, स. 80)

रब की इ़बादत की दुश्वारी और गुनाहों की बीमारी
दोनों आफ़तें दूर हों ख़्वाजा या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़! हमारे आक़ा, हिन्द के राजा, ख़्वाजा साहिब रोज़ाना दो बार ख़त्मे क़ुरआन करें और हम आ़शिक़ाने ख़्वाजा से पूरे महीने बल्कि पूरे साल में एक बार भी क़ुरआने करीम ख़त्म न हो ? येह कैसा इ़श्क़ और कैसी महब्बत है ? ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के नक़्शे क़दम पर चलते हुए रोज़ाना तिलावते क़ुरआने करीम का मा'मूल बनाने की कोशिश कीजिये और इस की बरकात समेटिये, घर में तिलावते क़ुरआन होती रहेगी तो रह़मतों का नुज़ूल होगा और बलाएं, आफ़तें दूर होंगी। तिलावते क़ुरआन का शौक़ पाने के लिये तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़िये और रोज़ाना तिलावते क़ुरआन करने के लिये तय्यार हो जाइये।

तिलावते क़ुरआन के फ़ज़ाइल

(1) اَفْضَلُ عِبَادَةِ اُمَّتِیْ تِلَاوَةُ الْقُرْاٰنِ या'नी मेरी उम्मत की अफ़्ज़ल इ़बादत तिलावते क़ुरआन है। (شعب الایمان للبیهقی، ۲/۳۵۴، حدیث: ۲۰۲۲ دون اللفظ "تلاوة")

(2) **अल्लाह** पाक ने मख़्लूक़ पैदा करने से हज़ार साल पहले सूरए त़ाहा

और यासीन की तिलावत फ़रमाई, जब फ़िरिश्तों ने क़ुरआन सुना तो बोले : ख़ैरो ख़ूबी है उस उम्मत को जिस पर येह उतरेगी और ख़ूबी है उन सीनों को जो इसे उठाएंगे और ख़ूबी है उन ज़ुबानों को जो इसे पढ़ेंगी।

(المجالسة وجواهر العلم، ۱/ ۲۱، حدیث: ۱۴)

(3) तीन क़िस्म के लोग बरोज़े क़ियामत सियाह कस्तूरी के टीलों पर होंगे उन्हें किसी क़िस्म की घबराहट न होगी, न उन से हिसाब लिया जाएगा यहां तक कि लोग हिसाब से फ़ारिग़ हों। (उन में से एक) वोह शख़्स है जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये क़ुरआने पाक की तिलावत की और लोगों की इमामत की जब कि वोह उस से ख़ुश हों।

(شعب الایمان، ۲/ ۳۴۸، حدیث: ۲۰۰۲ بتغیر)

इलाही ख़ूब दे दे शौक़ क़ुरआं की तिलावत का *शरफ़ दे गुम्बदे ख़ज़रा के साए में शहादत का*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

पीरो मुर्शिद की बारगाह में हाज़िरी

हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लगातार बीस साल अपने पीरो मुर्शिद हज़रते उ़स्मान हार्वनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ रहे और पीरो मुर्शिद के साथ ही हाज़िरिये मदीना से मुशर्रफ़ हुए। बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में हाज़िरी के वक़्त मुवाजहा मुबारक के सामने पीरो मुर्शिद ने जब आप को **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ करने का फ़रमाया तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने निहायत अदबो एह़तिराम के साथ बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ किया तो अन्दर से जवाब अया : ''وَعَلَيْكُمُ السَّلَام या क़ुत़्बल मशाइख़्।'' येह जवाब सुन कर पीरो मुर्शिद ने सज्दए शुक्र

अदा किया और फ़रमाया : अब तुम दरजए कमाल को पहुंच गए हो।

(हिन्द के राजा, स. 72)

सुल्ताने कौनैन का सदक़ा मौला अ़ली ह़सनैन का सदक़ा
सदक़ा ख़ातूने जन्नत का या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूर ग़ौसे पाक और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़

ऐ आ़शिक़ाने औलिया ! ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नजीबुत्त़रफ़ैन (या'नी ह़सनी हुसैनी सय्यिद) थे। आप के अब्बूजान और अम्मीजान दोनों सादाते किराम के घराने से तअ़ल्लुक़ रखते थे। मलिकुत्तह़रीर ह़ज़रते अ़ल्लामा अर्शदुल क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : अब्बूजान की त़रफ़ से आप का नसब नवासए रसूल, शहीदे करबला ह़ज़रते इमाम हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه और अम्मीजान की त़रफ़ से आप का सिल्सिला जिगर गोशए मुर्तज़ा ह़ज़रते इमाम ह़सन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه से जा मिलता है। सरकारे ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अम्मीजान हुज़ूरे ग़ौसे पाक (शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) की चचाज़ाद बहन हैं, इस रिश्ते से हुज़ूरे ग़ौसे पाक ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के मामूं होते हैं। (ह़यातु ख़्वाजए आ'ज़म, स. 69)

अ़ज़ीम आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, ग़ुलामे ग़ौसे पाक, गदाए ग़रीब नवाज़, आ़शिक़े इमाम अह़मद रज़ा, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपनी ना'तिया किताब "वसाइले बख़्शिश" में लिखते हैं :

या मुईनद्दीन अजमेरी ! करम की भीक दो अज़ पए ग़ौसो रज़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
शब्बरो शब्बीर का सदक़ा बलाएं दूर हों ऐ मेरे मुश्किल कुशा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

करामते ख़्वाजा ब ज़बाने इमाम अहमद रज़ा

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के मज़ार से बहुत फ़ुयूज़ो बरकात हासिल होते हैं, मौलाना बरकात अहमद साहिब मर्हूम जो मेरे पीरभाई और मेरे वालिदे माजिद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के शागिर्द थे उन्हों ने मुझ से बयान किया कि मैंने अपनी आंखों से देखा कि एक ग़ैर मुस्लिम जिस के सर से पैर तक फोड़े (चिकन पोक्स) थे, **अल्लाह** ही जानता है कि किस क़दर थे, ठीक दोपहर को आता और दरबार शरीफ़ के सामने गर्म कंकरों और पथ्थरों पर लोटता और कहता : ख्वाजा अगन (या'नी ऐ ख़्वाजा ! जलन) लगी है। तीसरे रोज़ मैं ने देखा कि बिल्कुल अच्छा हो गया है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 384) बिरादरे आ'ला हज़रत मौलाना हसन रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ बारगाहे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ में अर्ज़ करते हैं :

फिर मुझे अपना दरे पाक दिखा दे प्यारे आंखें पुरनूर हों फिर देख के जल्वा तेरा
मुहूये दीं ग़ौस हैं और ख़्वाजा मुईनुद्दीं हैं ऐ हसन क्यूं न हो महफ़ूज़ अक़ीदा तेरा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बचपन ही से ग़रीब नवाज़

ईद का दिन था, हर तरफ़ ख़ुशियों की चहल पहल थी, हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अच्छा लिबास पहने ईद की नमाज़ पढ़ने

तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में एक नाबीना लड़के को देखा जो रास्ते में उदास व ग़मगीन खड़ा था उस का उतरा हुवा चेहरा, शिकस्ता पैराहन (या'नी फटे हुए जूते) ग़ुर्बत ज़दा हाल और बेचारगी देख कर ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का दिल भर आया उसी वक़्त अपने कपड़े उतार कर उस ग़रीब व नाबीना बच्चे को पहना दिये (और ख़ुद पुराने कपड़े पहन कर) उसे अपने साथ ईदगाह ले गए। इस वाक़िए की रोशनी में येह कहना ग़लत न होगा कि बचपन ही से ह़ज़रते ख़्वाजा "ग़रीब नवाज़" थे।

(मुईनुल हिन्द ह़ज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, स. 22 ब तग़य्युरे क़लील)

झोलियां भरते हो मंगतों की मुझे भी हो अ़ता हिस्सए जूदो सख़ा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
नै मैं साइल राज का नै तख़्त का नै ताज का मैं फ़क़त मंगता तेरा ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दिल की बात जान ली (ह़िकायत)

ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه दौराने सफ़र एक कमज़ोर बदन बुज़ुर्ग से मिले, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने सोचा कि इन से पूछूं कि आप इस क़दर ज़ईफ़ (या'नी कमज़ोर) क्यूं हैं ? वोह बुज़ुर्ग रोशन ज़मीर थे, ख़्वाजा साह़िब के पूछने से पहले उन्हों ने ख़ुद ही बताया कि एक दिन मेरा दोस्तों के साथ एक क़ब्रिस्तान जाना हुवा। मैं एक क़ब्र के पास बैठ गया वहां कोई हंसी की बात हुई तो मुझ से क़ह्क़हा लग गया, उस क़ब्र से आवाज़ आई, ऐ ग़ाफ़िल ! जिस के पीछे मौत हो और जिस का मलकुल मौत से वासित़ा पड़ना है और जिस ने ज़मीन के नीचे क़ब्र में दफ़्न हो जाना है जहां उस के साथी सांप और बिच्छू हों उस को हंसी

से क्या काम ? जब मैं ने येह सुना, वहां से उठा और दोस्तों को छोड़ कर इस ग़ार में आ कर रहने लगा हूं, आज तक उस वाक़िए के ख़ौफ़ से पिघल रहा हूं और चालीस साल से शर्म के मारे मैं ने आस्मान की त़रफ़ नहीं देखा। (तज़्किरए ख़्वाजए अजमेर, स. 14)

डूबा अभी डूबा मुझे लिल्लाह संभालो सैलाब गुनाहों का बड़े ज़ोर से आया
हो चश्मे शिफ़ा अब तो शहा ! सूए मरीज़ां इस्यां के मरज़ ने है बड़ा ज़ोर दिखाया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए में हमारे लिये बड़ा दर्स है। अगर्चे "क़ह्क़हा" लगाना गुनाह नहीं मगर इस से बचना चाहिये क्यूं कि क़ह्क़हा लगाना सुन्नत नहीं है और ज़ियादा हंसने से दिल मुर्दा हो जाता है नीज़ क़ब्रिस्तान में हंसना तो और ज़ियादा बुरा है, क्यूं कि क़ब्रिस्तान तो इब्रत ह़ासिल करने की जगह है यहां आ कर तो अपनी मौत और अपने दफ़्न होने को याद कर के रोना चाहिये, तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीसे पाक है **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : लज़्ज़तों को ख़त्म करने वाली मौत को बहुत ज़ियादा याद किया करो। (ترمذی،۴/۱۳۸،حدیث:۲۳۱۴)

लिहाज़ा सच्चे दिल से अपने तमाम गुनाहों से तौबा कर के औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ की मुबारक ज़िन्दगी से रोशनी लेते हुए इस के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश फ़रमाइये, आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो कर नेकियां करने और नेकी की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ हो जाइये नीज़ नेक बनने के लिये "72 नेक आ'माल" पर पाबन्दी से अ़मल कीजिये,

रोज़ाना वक़्त मख़्सूस कर के अपने सारे दिन के आ'माल का जाएज़ा लीजिये और नेक अ़मल होने पर **अल्लाह** पाक का शुक्र और गुनाह हो जाने की सूरत में सच्ची तौबा करनी चाहिये ।

गोरे नेकां बाग़ होगी ख़ुल्द का मुजरिमों की क़ब्र दोज़ख़ का गढ़ा
खिलखिला कर हंस रहा है बे ख़बर ! क़ब्र में रोएगा चीख़ें मार कर
कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी
वक़्ते आख़िर या ख़ुदा ! अ़त्तार को ख़ैर से सरकार का दीदार हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

ग़रीब नवाज़ से अमीरे अहले सुन्नत की मह़ब्बत

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ 5 रजबुल मुरज्जब 1431 हि. ''उ़र्से ग़रीब नवाज़'' के मौक़अ़ पर होने वाले अपने एक बयान में फ़रमाते हैं : बड़े बड़े बादशाह दुन्या में आए और चले गए लेकिन इस बेताज बादशाह (या'नी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ) को दुन्या से रुख़्सत हुए सदियां बीत गईं, आज भी मज़ारात पर लाखों दीवाने जम्अ़ हैं, कोई ज़िन्दा बादशाह या वज़ीर भी लाखों लोगों को जम्अ़ नहीं कर सकता, कर ले तो बहुत पापड़ बेलने पड़ें, लेकिन ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की सल्त़नत लाखों लाख बल्कि करोड़ों लोगों के दिलों पर क़ाइम है और दुन्या भर से लोग आप की त़रफ़ खिचे चले आते हैं, न सिर्फ़ मुसल्मान बल्कि ग़ैर मुस्लिम भी आप के दरबार पर आ कर सरे नियाज़ झुकाते हैं, ऐसी बुलन्द आप की शान है ।

अमीरे अहले सुन्नत दरे ख़्वाजा पर

ऐ आ़शिक़ाने ख़्वाजा ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! अमीरे अहले सुन्नत अ़ज़ीम आ़शिक़े ख़्वाजा व रज़ा हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दो बार अजमेर शरीफ़ ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुए हैं, 1998 ई. में शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म के मुबारक महीने में नफ़्ल रोज़ा रख कर अपने जा नशीन साह़िब ज़ादा हुज़ूर, ह़ाजी उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي और कई आ़शिक़ाने ख़्वाजा के साथ बा'दे फ़ज्र मज़ारे ग़रीब नवाज़ पर ह़ाज़िर हुए, आ़शिक़े ख़्वाजा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अजमेर शरीफ़ पहुंच कर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शान में एक ''मन्क़बत'' लिखी जिस का पहला शे'र येह है : ''मैं हूं साइल मैं हूं मंगता, या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो'' ''हाथ बढ़ा कर डाल दो टुकड़ा या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो'' अमीरे अहले सुन्नत दरबारे ग़रीब नवाज़ पर संगे मरमर की मुबारक जालियों की त़रफ़ अदबन खड़े खड़े ग़ालिबन अपनी चादर शरीफ़ को झोली की सूरत में फैला कर मन्क़बत पेश कर रहे थे कि इस जुम्ले ''या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो, या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो'' की तक्रार हो रही थी कि कहीं से एक ताज़ा गुलाब की पत्ती अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की झोली में आ कर गिर गई, फिर ख़ुशी के आ़लम में येह आवाज़ बुलन्द हुई ''ख़्वाजा ने मेरी झोली भर दी, ख़्वाजा ने मेरी झोली भर दी'' इतने में जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत साह़िब ज़ादए अ़त्तार ह़ाजी उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِي ने वोह पत्ती अपने प्यारे प्यारे अब्बूजान की चादर शरीफ़ से उठा ली और

बा'दे मग़रिब इफ़्तार के वक़्त उसे खा लिया। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

मन्क़बत के चन्द अश्आ़र येह हैं

मैं हूं साइल मैं हूं मंगता — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
हाथ बढ़ा कर डाल दो टुकड़ा — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
जो भी साइल आ जाता है — मन की मुरादें पा जाता है
मैं ने भी दामन है पसारा — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
मुझ को इ़श्क़े रसूल अ़ता हो — ख़्वाजा नज़रे करम से बना दो
शाहे मदीना का दीवाना — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो
दे दो तुम अ़त्तार को ख़्वाजा — सुन्नत की ख़िदमत का जज़्बा
हर सू दीं का बजा दे डंका — या ख़्वाजा मेरी झोली भर दो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

आ़शिक़े ग़रीब नवाज़

ऐ आ़शिक़ाने औलिया! शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ तमाम सह़ाबा व अहले बैत عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان, औलियाए किराम से बेह़द अ़क़ीदतो मह़ब्बत रखते हैं, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़ज़रत मुईनुद्दीन ह़सन सन्जरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से आप की मह़ब्बत अपनी मिसाल आप है, अमीरे अहले सुन्नत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से बेह़द प्यार करते हैं, बारहा आप अपने बयानात व मदनी मुज़ाकरों में हिन्द के रहने वाले आ़शिक़ाने रसूल को इस त़रह़ मुख़ात़ब फ़रमाते हैं

''मेरे ख़्वाजा व रज़ा'' के हिन्द में रहने वाले इस्लामी भाई। अमीरे अहले सुन्नत ने ख़्वाजा साहिब की शान में अपनी ना'तिया किताब ''वसाइले बख़्शिश'' में तीन मनाक़िब लिखी हैं और आप ने ख़्वाजा साहिब की करामात पर बा क़ाइदा एक रिसाला बनाम ''ख़ौफ़नाक जादूगर'' भी लिखा है नीज़ अमीरे अहले सुन्नत ख़्वाजा साहिब के उ़र्स शरीफ़ 6 रजबुल मुरज्जब में छटी शरीफ़ की निस्बत से 6 मदनी मुज़ाकरों का एहतिमाम फ़रमाते हैं, जहां इन मदनी मुज़ाकरों में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ समेत दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ الله के ज़िक्रे ख़ैर के ज़रीए आ़शिक़ाने औलिया को नेकी की दा'वत दी जाती है वहीं मदनी मुज़ाकरे से क़ब्ल यादे ग़रीब नवाज़ में मदनी मर्कज़ में ''जुलूसे ख़्वाजा'' भी निकाला जाता है जिस में अमीरे अहले सुन्नत के ख़्वाजा साहिब की शान में लिखे हुए मुख्तलिफ़ ''ना'रे'' और मन्क़बतें पढ़ी जाती हैं। अमीरे अहले सुन्नत के ख़्वाजा साहिब की शान में लिखे हुए ना'रे येह हैं :

ख़्वाजए ख़्वाजगां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़	ऐ शहे सालिहां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़
हैं कसे बे कसां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़	मुर्शिदे नाक़िसां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़
ह़ामिये बे बसां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़	हादिये गुमरहां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़
सय्यिदे ज़ाहिदां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़	रहबरे कामिलां	ग़रीब नवाज़ ग़रीब नवाज़

अमीरे अहले सुन्नत ख़्वाजा साहिब से अ़क़ीदतो मह़ब्बत की बिना पर बिल ख़ुसूस उ़र्से ग़रीब नवाज़ के दिनों में एक कार्ड अपने मुबारक सीने पर लगाए रखते हैं जिस में दो फ़रामीने ग़रीब नवाज़ लिखे हैं, तम्ग़ए अ़त्तार (या'नी कार्ड) पर ख़्वाजा साहिब के चमक्ते दमक्ते सफ़ेद गुम्बद की तस्वीर भी बनी हुई है। (कार्ड की तस्वीर येह है)

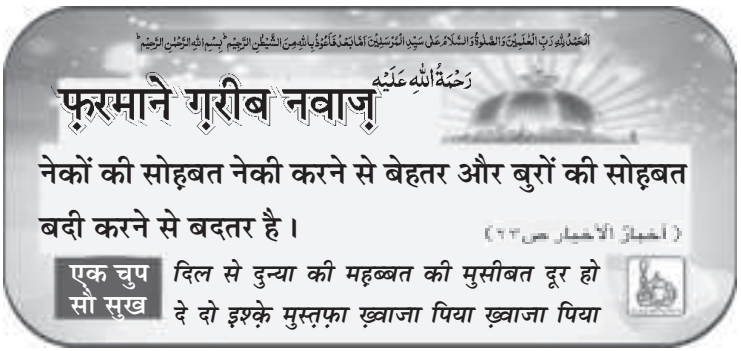

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

कल क्या मुंह दिखाएंगे ?

ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक मरतबा गुज़र एक ऐसे शह्र से हुवा जहां लोग वक़्त से पहले ही नमाज़ के लिये तय्यार हो जाते और वक़्त पर नमाज़ अदा करते । उन का कहना था कि अगर हम नमाज़ की तय्यारी जल्दी नहीं करेंगे तो हो सकता है इस का वक़्त निकल जाए फिर कल क़ियामत के रोज़ किस त़रह़ येह मुंह **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को दिखा सकेंगे ?

(दलीलुल आ़रिफ़ीन, स. 68)

नमाज़ इ़ज़्ज़त का सबब है

ऐ आ़शिक़ाने ग़रीब नवाज़ ! ह़ज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ के इर्शादात की मश्हूर किताब ''दलीलुल आ़रिफ़ीन'' में ह़ज़रते ख़्वाजा मुईनुद्दीन رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : बन्दा सिर्फ़ नमाज़ से ही क़ाबिले इ़ज़्ज़त हो सकता है इस लिये कि नमाज़ मोमिन की मे'राज है, तमाम मक़ामात से बढ़ कर नमाज़ है, **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात का सब से पहला वसीला ''नमाज़'' ही है, मज़ीद इर्शाद फ़रमाया : नमाज़ एक राज़ है जो **अल्लाह** पाक की बारगाह में बन्दा बयान करता है, ह़दीसे पाक में है : नमाज़ी अपने रब्बे करीम से मुनाजात करने वाला है । (مسلم،ص۲۲۰،حدیث:۱۲۳۰) मज़ीद फ़रमाते हैं : नमाज़ एक अमानत है जो **अल्लाह** पाक ने अपने बन्दों के ह़वाले की है, लिहाज़ा बन्दों पर लाज़िम है कि वोह इस अमानत में किसी क़िस्म की ख़ियानत न करें ।

(दलीलुल आ़रिफ़ीन उर्दू, स. 64 अज़ हश्त बिहिश्त, शब्बीर बिरादर्ज़)

हर इ़बादत से बरतर इ़बादत नमाज़ सारी दौलत से बढ़ कर है दौलत नमाज़
नारे दोज़ख़ से बेशक बचाएगी येह रब से दिलवाएगी तुम को जन्नत नमाज़
या ख़ुदा तुझ से अ़त्तार की है दुआ़ मुस्त़फ़ा की पढ़े प्यारी उम्मत नमाज़

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

एक बार नाराज़ हुए

सिल्सिलए चिश्तिय्या के अ़ज़ीम पेश्वा, ह़ज़रते बाबा फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मेरे पीरो मुर्शिद ह़ज़रते ख़्वाजा क़ुत़्बुद्दीन बख़्तियार काकी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ ने इर्शाद फ़रमाया : मैं 20 साल तक शैख़ुल मशाइख़ ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में

रहा, इस पूरे अ़र्से में मैं ने सिर्फ़ एक मरतबा आप को किसी पर नाराज़ होते देखा, वोह इस त़रह़ कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक बार कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे कि आप के एक मुरीद को एक शख़्स पकड़ कर कह रहा था मेरे रुपै दो (या'नी सख़्ती से अपने क़र्ज़े का मुत़ालबा कर रहा था)। ख़्वाजा साहिब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने जब येह देखा तो उस शख़्स को बहुत समझाया मगर वोह शख़्स न माना, आख़िरे कार आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने नाराज़ हो कर अपने मुबारक कन्धों से चादर उतार कर ज़मीन पर डाल दी, वोह सोने की अश्रफ़ियों से भरी हुई थी, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : जितनी रक़म तुम ने मेरे मुरीद से लेनी है उतनी यहां (या'नी अश्रफ़ियों में) से ले लो। इस से ज़ियादा न लेना, उस ने लालच में आ कर कुछ ज़ियादा लेनी चाहीं तो उस का हाथ ख़ुश्क हो गया, उस ने ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बारगाह में अ़र्ज़ किया : मैं तौबा करता हूं, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने दुआ फ़रमाई तो उस का हाथ ठीक हो गया।

(असरारुल औलिया उर्दू, स. 379, अज़ हश्त बिहिश्त, शब्बीर बिरादर्ज़)

तेरी उल्फ़त में जियूं तेरी महब्बत में मरूं हो करम ऐसा शहा ! ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया
एक ज़र्रा हो अ़ता अ़त्तार के हो जाएगा ख़्वाजा ! घरभर का भला ख़्वाजा पिया ख़्वाजा पिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ग़रीब नवाज़ से	
औलादे मुबारक	3	अमीरे अहले सुन्नत की महब्बत	12
कलामुल्लाह से महब्बत	5	आ़शिक़े ग़रीब नवाज़	14
तिलावते क़ुरआन के फ़ज़ाइल	6	नमाज़ इ़ज़्ज़त का सबब है	17
बचपन ही से ग़रीब नवाज़	9	☆☆☆	☆

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

यौमे ग़रीब नवाज़

رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ

ख़्वाजा साहिब फ़रमाते हैं :

''ऐ लोगो ! अगर तुम क़ब्रों में सोए हुओं का ह़ाल जान लो तो मारे ख़ौफ़ के खड़े खड़े पिघल जाओ'' ।

(फ़ैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, स. 15, ब तग़्युरे क़लील)

ख़्वाजए हिन्द वोह दरबार है आ'ला तेरा

कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

मक्का–मदीना–बक़ीअ़–अजमेर–बग़दाद

6 रजबुल मुरज्जब 1438 हि.

3-4-2017

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

978-969-722-153-0
01082172

فیضان مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net